

नेवटा में बढ़ा 15 प्रतिशत पानी

जयपुर ● इसरो द्वारा विकसित देश के अपने जीपीएस 'नाविक' का डेटा जयपुर में जुटाया जा रहा है। अजमेर रोड स्थित जेके लक्ष्मीपत यूनिवर्सिटी में पिछले कुछ महीनों से इसकी रिसर्च की जा रही है। जिसके ग्राउंड रिजल्ट भी आना शुरू हो गए हैं। हाल ही स्टूडेंट्स ने सैटेलाइट इमेज के जरिए ग्राउंड फीचर्स को क्लासिफाई किया और साथ ही नेवटा बांध का फील्ड सर्वे किया तो पाया कि बांध में मार्च के बाद लगभग 15 प्रतिशत ज्यादा पानी आया है। इसका उपयोग आगामी पांच महीनों के लिए आसानी से किया जा सकता है। यूनिवर्सिटी के इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी के डायरेक्टर डॉ. अनुपम सिंह का कहना है कि डेटा को इसरो को भेजा जा रहा है। इसरो इसे राज्य सरकार को रिपोर्ट ट्रांसफर कर देगा। जिससे प्रदेश में बांधों की स्थिति के बारे में पता लगाया जा सकेगा। डॉ. अनुपम का कहना है कि नाविक क्षेत्रीय स्तर पर काफी मदद करेगा। जिससे बांधों में पानी का आंकलन, सूखा या आपदा का सही विश्लेषण और ग्राउंड वाटर लेवल को आइडेंटिफाई करना आसान होगा।

विभिन्न क्षेत्रों में इस्तेमाल

बढ़े हुए पानी का उपयोग एक्वा कल्चर, एग्रीकल्चर, एनीमल और ग्राउंड वाटर के लिए होगा। रिसर्चर विकांत ने बताया कि नाविक के डेटा से वैमिसिटी को कैल्कुलेट कर बाढ़ आने के खतरों के बारे में भी पता लगाया जा सकता है। इसके लिए हिस्टोरिकल डेटा को कैल्कुलेट कर सकते हैं। संभावित बाढ़ का पता चलने पर लोगों को इससे बचाने के लिए बफर जोन बनाया जा सकता है। हालांकि अभी एक्यूरेट डेटा के लिए यदि ग्राउंड बेस्ड नेटवर्क से राडार बेस्ड नेटवर्क पर शिफ्ट करते हैं तो यह बेहतर होगा। डॉ. अनुपम का कहना है कि ढाई साल में 25 डैम पर शोध करेंगे। जिसमें छोटे डैम को भी शामिल किया गया है।